शोध सार

हिंदी गद्य साहित्य में 'उपन्यास' अन्य गद्य विधाओं की अपेक्षा अधिक लोकप्रिय विधा है क्योंकि अन्य कलारूपों की तुलना में उपन्यास का जीवन के साथ गहरा संबंध होता है। उपन्यास में व्यक्ति और समाज, अतीत और वर्तमान, यथार्थ और आदर्श जैसे परस्पर विरोधी तत्वों भी समाहित रहता हैं। यही कारण है कि उपन्यास केवल काव्यरूप ही नहीं है बल्कि वह अपने युग के मानवीय संघर्षों का साक्ष्य भी है। उपन्यास में लेखक वर्तमान की स्थितियों का चित्रण तो करता ही है साथ ही भावी जीवन के बारे में थोड़ा बहुत संकेत करता है। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में 'मैला आँचल' और 'पीढ़ियाँ' उपन्यास में उपस्थित समाज के आर्थिक, राजनीतिक एवं देशकाल वातावरण को समझने का प्रयास किया है। 'मैला आँचल' और 'पीढ़ियाँ' दोनों की कथावस्तु ग्राम केन्द्रित है तथा भाषा भी ग्राम केन्द्रित है लेकिन 'पीढ़ियाँ' उपन्यास अनूदित होने के कारण इसकी भाषा खड़ी बोली की है फिर भी अनुवादक ने उपन्यास के मूल कथ्य को बचाते हुए कहीं-कहीं ग्रामीण शब्दों का उपयोग किया है। दोनों रचनाकार भी ग्रामीण परिवेश से गहरे जुड़े हुए हैं। दोनों उपन्यासकारों की विशेषता यह है कि जिस अनुभव की व्यंजना वह उपन्यास में करते हैं वह उधार की नहीं बल्कि यथार्थ की है। दोनों रचनाओं में गांवों में रहने वाले सामान्य मनुष्य के जीवन संघर्ष को चित्रित किया गया है। नई औद्योगिक प्रक्रिया ने गांव के जीवन को भी प्रभावित किया है। गांवों में भी शिक्षा का प्रचार-प्रसार बढ़ा, राष्ट्रीय चेतना का उदय हुआ, रूढ़ियों और अंधविश्वासों का विरोध हुआ। हालांकि 'पीढ़ियाँ' उपन्यास में राष्ट्रीय चेतना का वह रूप नहीं दिखाई देता जो 'मैला आँचल' में दिखाई देता है क्योंकि 'पीढ़ियाँ' आजादी के बहुत बाद की रचना है। तुलनात्मक अध्ययन में दो से अधिक भाषाओं में रचित साहित्य की समानताओं एवं विषमताओं को आधार बनाकर अध्ययन किया जाता है। 'मैला आँचल' और 'पीढ़ियाँ'उपन्यासों में भी कई जगहों पर समानता है तो कई जगहों पर असमानता भी है क्योंकि दोनों उपन्यासों में उपस्थित कथावस्तु की भौगोलिकता, वातावरण भिन्न-भिन्न हैं तो जाहिर है कि कुछ असमानता भी होगी। कुछ ऐसे भी सामाजिक मुद्दे हैं जो समय, काल, भौगोलिकता, वातावरण आदि को लांघ कर सभी जगहों पर पाये जाते हैं। आंचलिक उपन्यासों में केंद्रीय तत्व संघर्षरत मनुष्य जीवन है। यह मनुष्य तमाम प्रकार की मान्यताओं, परम्पराओं, विश्वासों, धार्मिक सामाजिक आस्थाओं से जुड़ा होता है। इस

तरह का चित्रण दोनों उपन्यासों में किया गया है। 'पीढ़ियाँ' उपन्यास में सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना का विस्तृत वर्णन के साथ ही चेट्टी समुदाय के लोक तत्व व संस्कृति का समग्र बोध होता है लेकिन राजनीतिक चेतना का कहीं-कहीं संकेतमात्र उपलब्ध होता है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद जटिल भारतीय जीवन के यथार्थ का विविध चित्र 'मैला आँचल' में दिखाई देता है। राजनीति अस्थिरता, सामाजिक मूल्यों-मान्यताओं में उलटफेर, संबंधों और स्वार्थों की टकराहट आदि के फलस्वरूप जीवन का जो नया रूप निर्मित हुआ उसे रेणु ने गंभीरता पूर्वक महसूस करते हुए चित्रित किया है। 'पीढ़ियाँ' उपन्यास में दहेज प्रथा का व्यापक चित्रण किया गया है। दिरवियम के पिता अपनी पुत्री के विवाह में होने वाले खर्च और दहेज की दर से अपने बेटियों का विवाह अयोग्य वर से करता है। जिससे वह अपनी बेटियों के साथ स्वयं भी परेशान रहता है। दिरवियम दहेज के खिलाफ खड़ा होता है लेकिन असफल होता है फिर भी वह पूरे सामर्थ्य के साथ दहेज का विरोध करता है। यह चेतना नवयुवकों में दिखाई देती है जो भविष्य के लिए आशामय संकेत है। साथ ही वह सशक्त संदेश देता है कि साहस और विवेक के बल पर प्रयास किया जाए तो आततायी का झूठा किला एक दिन निश्चित रूप से ध्वस्त हो सकता है। 'मैला आँचल' में शोषण के तमाम चौराहों से गुजरते हुए नारी स्त्रीत्व एवं देवीत्व के संज्ञान से विश्वास उठता गया जिसके फलस्वरूप वे रूढ़ियों को तोड़कर पुरुषों कि समकक्षता प्राप्त करने कि कोशिश करती हैं। नारी अब घर की चार दीवारी में बंद रहकर केवल बच्चे पैदा करने वाली मशीन ही नहीं कहलाना चाहती अपितु वह भी अपने हृदय में उठने वाली अभिलाषाओं और इच्छाओं को साकार रूप में देखना चाहती हैं।

'मैला आँचल' में जमींदारी प्रथा का वैधानिक रूप से उन्मूलन होने पर भी रेणु ने ऐसे जमींदारों का चित्रण किया है जो किसान बनकर निरंतर शोषण करते हैं। रेणु ने ग्रामीण जीवन में विभिन्न स्तरों पर व्याप्त आर्थिक-सामाजिक शोषण को बेपर्दा करते हुए उसके प्रति अपना रोष व्यक्त किया है। 'पीढ़ियाँ' उपन्यास में सबलों द्वारा निर्बलों पर अत्याचार पद और ओहदे का दुरुपयोग करते हुए सत्ता और शासन को अपने हाथ में लेते हुए नियमों की गलत-सलत व्याख्या देने वालों का चित्रण है। गांव के अल्हण युवक कुत्तामल को 'कीचड़ में खिला' कमल कह सकते हैं। समाज कि दृष्टि में धूर्त लगते हुए भी कुत्तामल अतिशय ढंग से न्याय का पक्षधर है। अन्याय से जूझने के लिए सदा कटिबद्ध कुत्तामल अंत में अपने जानी दुश्मन सेवन्त पेरुमाल के प्राण बचाता हुआ स्वयं अपना बलिदान दे देता है।

'मैला आँचल' में एक ग्रामीण अंचल को उसके प्रकृत रूप में देखा और अनुभव किया जा सकता है। ग्रामीण जनों के आचार-विचार, बोली-भाषा, मान्यताएँ-विश्वास, गीत-संगीत, पर्व-त्योहार, सुख-दुख इतने सहज और विश्वसनीय हैं जिसे हम अपेक्षित कर रहें है। रेणु ने बड़ी सूक्ष्म भंगिमाओं में आत्मीयता के साथ इस उपेक्षित और त्याज्य को उठाया और उभारा है। 'पीढ़ियाँ' उपन्यास में लगभग सत्तर वर्षों तक चार पीढ़ियों की कहानी मात्र नहीं है, बल्कि एक सुनहले अतीत के उत्तराधिकारी एक पूरे समुदाय कि रस्मों-रूढ़ियों, आस्था-विश्वासों का इतिहास भी है तथा उसके संस्कारों, त्योहारों, उत्सवों, ग्राम्य गीतों का जीवंत वर्णन है।